13 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

त्याग और महात्याग द्वारा सर्वंश त्यागी होने का अनुभव

➢➢ पुराने जीवन से श्रेष्ठ योगी जीवन

➳ _ ➳ ब्राह्मण आत्मा बनते ही इस जीवन की श्रेष्ठता समझ में आई...

→ परमात्म छत्रछाया में पलता, आगे बढ़ता हुआ ये मेरा श्रेष्ठ जीवन...

→ अधिकारी बन ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी कहलाई...

→ योग व ज्ञान की अभ्यासी आत्मा...

→ पुरानी दुनिया की अल्पकाल की प्राप्तियों से परे...

■ अब मैं अपने इस जीवन को श्रेष्ठता से सम्पूर्णता की तरफ ले जा रही हूं...

➳ _ ➳ मैं ब्राह्मण आत्मा पक्की निश्चय बुद्धि आत्मा हूं...

→ सम्पूर्णता की तरफ़ जाना अर्थात अपने पिता के और पास...

→ इस संकल्प को ले मैं अपने पुराने बचे हुए संस्कारों को खत्म कर रही हूं...

→ मेरे अलबेलेपन के संस्कार अब मुझे धोखा दे नहीं सकते...

→ मायावी दुनिया, सम्बन्ध,सम्पर्क का मुझे कोई आकर्षण नही है...

→ पुरानी दुनिया से किनारा कर लिया है...

→ लोहे की सारी जंजीरे तोड़ दी हैं...

→ पास्ट जीवन का सम्पूर्ण त्याग कर दिया है...

■ देहभान के नेचर के वशीभूत भी नहीं हूं...

➢➢ आयरन एज्ड से गोल्डन एज्ड में आ गई हूं

➳ _ ➳ सदा के लिए बन्धन मुक्त होना...

→ लोकिक सम्बन्धों से...

→ कार्य की प्रवर्ति से...

→ शरीर की प्रवर्ति से...

→ सेवा की प्रवर्ति से...

■ मैं त्यागी से महात्यागी आत्मा बन गयी हूं...

■ इन बन्धनों से मुक्त हो मुझे गुणों की, शक्तियों की प्राप्ति हो रही है...

➳ _ ➳ मैं, मेरा जैसी सोने की जंजीरों को भी तोड़ना...

→ मैं आत्मा अब हिम्मतवान...

→ शस्त्रधारी...

→ शक्तिस्वरूपा हूं...

→ बाबा की याद में सारे कर्म करती हूं...

→ मेरी सम्पूर्ण प्रवर्ति शुद्ध हो गई है...

→ महिमा के पुष्पों की वर्षा हो रही है...

→ माननीय और गायन योग्य आत्मा...

→ ये भी सोने की जंजीरे हैं, इनका भी त्याग...

■ इन सबका भी त्याग कर महात्यागी आत्मा बन गई हूं।

■ सर्व प्रकार की आसक्तियों की आहुति इस यज्ञ में डाल दी है।

■ सर्वंश त्यागी बन मेरी झलक बाप समान हो गयी है।

■ बाप को प्रत्यक्ष करने वाली सम्पन्न मूर्ति बन गयी हूं।

■ अब अन्य आत्माओं को भी मैं आत्मा परमात्म प्रेमी बना रही हूं।